Bihar Board Class 6 Social Science History Notes Chapter 6 जीवन के विभिन्न आयाम

पाठ का सारांश

- राजत्व की दैवी उत्पत्ति के सिद्धांत की चर्चा उत्तर वैदिक काल के साहित्य में मिलती है।
- ऋग्वेद के परवर्तीकालीन (अंत के समय में) पुरुष सूक्त में ब्राह्मण, राजन्य (क्षत्रिय), वैश्य एवं शूद्र, अर्थात चार वर्ण, की कल्पना की गई।
- उत्तर वैदिक काल स्पष्टतः वर्ण व्यवस्था पर आधारित था।
- वैदिक काल में शिक्षा मौखिक रूप से दी जाती थी, शिक्षार्थियों से वेदों के मूल पाठ को कंठस्थ करवाया जाता था।
- विद्यार्थियों को गुरु के आश्रम में 12 वर्षों तक रहना पड़ता था।
- वेद चार हैं-ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद।
- वेद को श्रुति (सुना हुआ) भी कहते हैं।
- वेद की भाषा को प्राक् संस्कृत या वैदिक संस्कृत कहते हैं।
- संस्कृत भाषा भारोपीय (भारत-यूरोप) भाषा वर्ग का अंग है।
- भारत की अनेक भाषाएँ- असमिया, गुजराती, हिन्दी, कश्मीरी और सिंधी तथा यूरोप की बहुत-सी भाषाएँ जैसे-अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन, ग्रीक (यूनानी) स्पैनिश आदि इसी परिवार से जुड़ी हुई है। इन्हें भाषा परिवार इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनके अनेक शब्द एक जैसे थे।
- वैदिक साहित्य के आधार पर वैदिक युग को दो कालखंडों में विभाजित किया जाता हैऋग्वैदिक युग (1500 B.C. से 1000 B.C.) एवं उत्तर वैदिक युग (1000 B.C. से 600 B.C.)
- वैदिक आर्य कई समूहों में भारत आये।
- ऋग्वेद में आर्य निवास स्थल के लिए सप्तसैन्धवः शब्द का प्रयोग किया गया है।

https://www.evidyarthi.in/